जलवायु परिवर्तन और छोटे बच्चों पर प्रभाव

पिछले कुछ सालों से देश की शहरी आबादी अलग ही तरह के मौसमों से रु-ब-रु हो रही है। अचानक से होने वाली तेज़ बारिश और जल भराव, बहुत ज्यादा तेज़ गर्मी और सूखा और अनियमित सर्दी... ऐसे जैसे मौसमी तंत्र ही उलट पलट गया हो ! इस साल कोटा, जयपुर, भुवनेश्वर, जलपाईगुड़ी-सिलीगुड़ी, लखनऊ, पणजी, कोच्ची, इंदौर, सूरत, जालंधर, गुवाहाटी, पुणे, जबलपुर आदि ऐसे प्रमुख शहर रहे, जिन्होंने बहुत तेज़ गर्मी या अचानक आई तेज़ बारिश और उस से उत्पन्न बाढ़ जैसे हालातों को झेला।

इन में शहरी ड्रेनेज के पास रहने वाले झुग्गी बस्ती अथवा अल्प आय वर्ग तथा भवन संनिर्माण और रेड़ी-फुटपाथ पर काम करने वालों पर काफी ध्यान गया, किन्तु इनके साथ इनके परिवार जनों; खासकर छोटे बच्चों और गर्भवती- धात्री महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभावों पर अपेक्षाकृत उतना नहीं सोचा गया; जबकि ये वो वर्ग है, जो इन जलवायु सम्बन्धी बदलावों से सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं।

ये जलवायु सम्बंधित बदलाव (खासकर तेज़ गर्मी और अचानक आई तेज़ बारिश) जलजनित बीमारियों, गर्मी से संबंधित बीमारियों और कुपोषण जैसे स्वास्थ्य जोखिमों को गंभीर रूप से बढ़ा देते हैं। बाढ़ के कारण अक्सर पीने के पानी के स्रोत दूषित हो जाते हैं, जिससे डायरिया की बीमारियाँ बढ़ जाती हैं, जबकि लू के कारण निर्जलीकरण, गर्मी से थकावट और श्वसन संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं, खासकर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए। इसके अलावा, दोनों समूहों को पोषण संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें गर्भस्थ और छोटे बच्चों को इन स्थितियों के दौरान बाधित खाद्य प्रणालियों और आवश्यक पोषण सेवाओं तक खराब पहुँच के कारण बौनापन, कमज़ोरी और कम वज़न की स्थिति का सामना करना पड़ता है। गर्भवती महिलाओं को पहले से ही एनीमिया का अधिक जोखिम होता है, जब बाढ़ या अत्यधिक गर्मी के कारण स्वास्थ्य सेवाएँ दुर्गम हो जाती हैं, तो उन्हें और भी स्वास्थ्य जटिलताओं का सामना करना पड़ता है।

इसके अलावा, चरम मौसमी स्थितियाँ स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और स्वच्छता जैसी आवश्यक सेवाओं तक पहुँच को महत्वपूर्ण रूप से बाधित करती हैं, जिससे इन कमज़ोर समूहों के लिए नुकसान और क्षति बढ़ जाती है। आंगनवाड़ी केंद्र, जो बचपन की शिक्षा और मातृ स्वास्थ्य देखभाल के लिए महत्वपूर्ण हैं, अक्सर ऐसी घटनाओं के दौरान बंद हो जाते हैं, जिससे बच्चों को महत्वपूर्ण विकास और शाला पूर्व शिक्षा के अवसर नहीं मिल पाते और गर्भवती महिलाओं को आवश्यक स्वास्थ्य जांच से वंचित होना पड़ता है। शहर के ड्रेनेज इलाकों और निचली बस्तियों में लचीले बुनियादी ढांचे की कमी से स्थिति और खराब हो जाती है, क्योंकि जलभराव के कारण समुदाय अलग-थलग पड़ जाते हैं। इन जटिल चुनौतियों के लिए तत्काल नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है, जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा, प्रारंभिक शिक्षा और बुनियादी ढांचे में जलवायु लचीलापन बढ़ाना है, ताकि बढ़ते जलवायु जोखिमों के बीच छोटे बच्चों और गर्भवती महिलाओं की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित किया जा सके।

स्वास्थ्य और पोषण सम्बन्धी गंभीर चुनौतियाँ

शहरों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा शहरी ड्रेनेज या ऐसे स्थानों पर रहता है, जहाँ जल भराव एक आम समस्या है। इन स्थानों में स्वच्छता की कमी होती है और तेज़ गर्मी में पर्याप्त ठंडक (कूलिंग) के संसाधन भी नहीं होते। इनमें वे लोग ज्यादा है, जिनकी स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच भी न्यून है। शहर के ये हिस्से छोटे बच्चों में मलेरिया, डेंगू, निमोनिया, डायरिया जैसी बीमारियाँ लेकर आता है। एकल परिवारों में रोज़ कमाने की मजबूरी छोटे बच्चों और गर्भवती महिलाओं को अलग-थलग कर देती है।

स्थानीय आंगनवाडी केन्द्रों तथा पार्क या अन्य खेलने के स्थानों तक पहुँच सीमित होने के चलते बच्चे घरों में ही कैद होकर रह जाते हैं, जिस से मानसिक स्वास्थ्य पर भी एक गंभीर संकट सामने आ रहा है। बच्चे अपनी उम्र के अन्य बच्चों के साथ खेल नहीं पाते और न ही पास के पार्क तक जा पाते हैं। इस स्थिति में इनके समग्र विकास पर काफी विपरीत असर पड़ना तय है। गर्भवती महिलाएँ और छोटे बच्चे, विशेष रूप से खराब अपशिष्ट प्रबंधन वाली कॉलोनियों में, वायुजनित प्रदूषकों में वृद्धि के कारण गंभीर श्वसन समस्याओं से पीड़ित होते हैं।

यह भी देखने में आया है कि मौसम की चरम स्थितियां खाद्य आपूर्ति को भी बाधित करती है। घर के सदस्य यदि पर्याप्त रूप से कमा नहीं पाते तो आय की कमी का असर सीधे तौर पर बच्चों से सम्बंधित खाद्य आपूर्ति पर पड़ता है। बच्चों और गर्भवती- धात्री महिलाओं को पर्याप्त पोषण नहीं मिलने से एनीमिया, कम वज़न, बौनापन जैसी गंभीर स्थितियां उत्पन्न करता है। आंगनवाडी केन्द्रों से पोषण सप्लाई बाधित होने पर बच्चों का ठीक से आयु अनुसार वज़न- लबाई जांच भी नहीं हो पाती और अतिरिक्त पोषाहार मिलने जैसी व्यवस्थाएं भी दम तोड़ देती है। कुपोषण और एनीमिया संक्रमण के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाता है और माताओं और बच्चों दोनों के स्वास्थ्य को जोखिम में डालता है।

बाढ़ और भारी वर्षा के दौरान, गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए रेफरल सेवाओं सहित स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच गंभीर रूप से प्रभावित होती है। आपातकालीन देखभाल, प्रसवपूर्व देखभाल और प्रसवोत्तर सेवाओं तक देरी से पहुँच के परिणामस्वरूप मातृ और शिशु मृत्यु दर में वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँचने वाली सड़कें अक्सर दुर्गम होती हैं, जिससे गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों दोनों को उच्च जोखिम होता है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC) और आंगनवाडी केंद्र, जो छोटे बच्चों और गर्भवती महिलाओं को आवश्यक स्वास्थ्य सेवा, पोषण और शाला पूर्व शिक्षा सेवाएँ प्रदान करते हैं, अक्सर चरम मौसम की घटनाओं के दौरान बंद हो जाते हैं। यह रुकावट न केवल आवश्यक सेवाओं तक पहुँच को सीमित करती है बल्कि बच्चों के प्रारंभिक वर्षों के दौरान उनके समग्र विकास को भी प्रभावित करती है।

अत्यधिक गर्मी की घटनाओं के दौरान, बच्चों को गर्मी से संबंधित बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है, खासकर खराब हवादार वातावरण जैसे कि भीड़भाड़ वाले घरों या आंगनवाड़ी केंद्रों में जहां ठंडक की कमी होती है। शहरों के उन हिस्सों में, जहाँ तापमान बहुत अधिक हो सकता है, बच्चों को अक्सर निर्जलीकरण, गर्मी से थकावट और हीट स्ट्रोक का सामना करना पड़ता है, जिससे गंभीर स्वास्थ्य जटिलताएँ होती हैं। इसके अलावा, शहरी बाढ़ के दौरान, बच्चों की सुरक्षा और भी कमज़ोर हो जाती है क्योंकि उन्हें अपने घरों से विस्थापित किया जा सकता है, जिससे वे खतरनाक परिस्थितियों के संपर्क में आ सकते हैं। बाढ़ का पानी मलबे और प्रदूषकों को ले जा सकता है, जिससे असुरक्षित वातावरण बनता है जो उनके स्वास्थ्य के लिए ख़तरा बन सकता है।

सीखने के अवसरों का सीमित होना

हम सभी जानते हैं कि बच्चे के शुरूआती ५ साल उसके समग्र विकास में बहुत महत्त्व रखते हैं। इन शुरूआती दिनों में बच्चा घर में अपने परिवारजनों के साथ, मोहल्ले और आंगनवाडी केंद्र में अपने हमउम्र बच्चों के साथ रहकर काफी कुछ सीखता समझता है, जो उसके आने वाले सालों के लिए महत्वपूर्ण है। मौसम में आने वाले अचानक बदलाव बच्चों की सीखने की इस प्रवृति और अवसरों को काफी सीमित कर देते हैं।

सरकारें अक्सर इस स्थिति में आंगनवाडी केंद्र बंद कर देती है, ताकि बच्चों को परेशानी नहीं हो। सुरक्षित, ठंडे और बच्चों के अनुकूल वातावरण तक पहुँच के बिना, उनकी ध्यान केंद्रित करने और सीखने की गतिविधियों में संलग्न होने की इससे न केवल बचपन की नियमित शिक्षा बाधित होती है, बल्कि बच्चे एक स्थिर, सुरक्षित सीखने के माहौल से भी वंचित हो जाते हैं। छोटे बच्चे महत्वपूर्ण विकासात्मक गतिविधियों से वंचित रह जाते हैं, जिससे संज्ञानात्मक, सामाजिक और शारीरिक विकास में देरी होती है। बच्चे फोन या टीवी पर अधिक निर्भर हो जाते हैं, जो बच्चों के समग्र विकास में एक बहुत बड़ी रूकावट के तौर पर सामने आया है। कई लोगों के लिए, ऐसे प्रारंभिक वर्षों के दौरान बुनियादी सीखने में ये अंतराल दीर्घकालिक चुनौतियों का कारण बन सकते हैं, जिसमें औपचारिक स्कूली शिक्षा में संक्रमण की कठिनाई भी शामिल है।

जल भराव और तेज़ गर्मी बच्चों को घर से बाहर मोहल्ले या पार्क जाने के लिए निकलने नहीं देती, जिस से उनके अन्य बच्चों से मिलने- मिलाने के अवसर कम हो जाते हैं। शहरों के पार्क और खेल के मैदान इन पर्यावरणीय परिवर्तनों को संभालने के लिए सुसज्जित नहीं हैं, जिससे कई तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं जो बच्चों की शारीरिक गतिविधि और खेल-आधारित सीखने के अवसरों को बाधित करती हैं, जो उनके समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं। हरित गलियारों और सुरक्षित रास्तों की कमी इन चुनौतियों को और बढ़ा देती है, जिससे बच्चों की स्वस्थ मनोरंजन स्थलों तक पहुँच सीमित हो जाती है और उनके शारीरिक और सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

मौसम के अचानक बदलाव परिवार की सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्थिति को प्रभावित करते हैं और उनका चिडचिड़ापन भी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करता हैं।

पलायन करके आये परिवारों में सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का संकट

शहर के आस पास के हिस्सों और छोटे जिलों से बड़े शहरों में नियमित पलायन होता है। यह अक्सर काम की तलाश में होता है। यह विस्थापन समुदायों के सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने को बाधित करता है, जिसके परिणामस्वरूप छोटे बच्चों की सांस्कृतिक पहचान खत्म हो जाती है। गर्भवती महिलाएँ, जो सामुदायिक सहायता प्रणालियों पर निर्भर करती हैं, उन्हें सामाजिक अलगाव का अनुभव हो सकता है, जो इस कमज़ोर अवधि के दौरान उनके मानसिक स्वास्थ्य को और प्रभावित करता है।

बड़ों के घर में नहीं होने से से बच्चों के लालन- पालन में कई प्रकार की चुनौतियाँ आती है। घर के पुरुषों का रोल लगभग ख़त्म हो जाता है और एकल महिलाओं की सहायता के लिए घर के अन्य सदस्य भी नहीं होते। इस स्थिति में गर्भवती- धात्री महिलाओं और बच्चों की देखभाल प्रभावित होती है। सामाजिक और सांस्कृतिक सामंजस्य का नुकसान गर्भवती महिलाओं के लिए तनाव बढ़ा सकता है और बच्चों की अपनेपन और पहचान की भावना को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

क्या हो समाधान ?

मौसम में ये बदलाव केवल किसी एक देश या शहर के कारण नहीं हो रहा है। समुद्र की सतह के लगातार गर्म होने और औसत तापमान में बढ़ोतरी जैसे प्रमुख कारणों चलते ये बदलाव हो रहे हैं। इस प्रकार के बदलावों में कार्बन उत्सर्जन एक बड़ा कारण है, जिस में अमेरिका, चीन, यूरोपीय देशों की तुलना में भारत जैसे देश का हिस्सा बहुत ही कम है। किन्तु भारतीय आबादी बुरी तरह से प्रभावित हो रही हैं।

- तात्कालिक समाधान की दिशा में भारतीय शहर चरम मौसम की घटनाओं के दौरान छोटे बच्चों और गर्भवती महिलाओं की सुरक्षा के लिए आपातकालीन राहत और संसाधन प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। इसमें हीटवेव के दौरान अस्थायी कूलिंग सेंटर या आश्रय स्थापित करना और बाढ़-ग्रस्त क्षेत्रों में स्वच्छ जल आपूर्ति और स्वच्छता सुनिश्चित करना शामिल हो सकता है। देखभाल, टीकाकरण और पोषण संबंधी सहायता प्रदान करने के लिए मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयों की त्वरित तैनाती बाढ़ और हीटवेव के दौरान स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच के नुकसान को कम करने में मदद कर सकती है।
- जागरूकता अभियानों के द्वारा समुदायों को स्वच्छता, गर्मी से बचाव और आपातकालीन सेवाओं तक पहुँचने के तरीके के बारे में सूचित करना चाहिए।
- मौजूदा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, जैसे कि समेकित बाल विकास, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK) और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) आदि में जलवायु लचीलापन (क्लाइमेट रेजिलियेंस) शामिल करने के लिए अपडेट किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, जलवायु-लचीले (क्लाइमेट रेजिलियेंट) पोषण कार्यक्रम और सशर्त नकद हस्तांतरण (कैश ट्रांसफर) शुरू करने से यह सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है कि बच्चों और गर्भवती महिलाओं को जलवायु घटनाओं के दौरान आवश्यक सेवाएँ मिलती रहें। ये योजनाएँ बाढ़ और हीटवेव से प्रभावित परिवारों को वित्तीय सहायता भी प्रदान कर सकती हैं, जिससे उन्हें भविष्य की चुनौतियों से उबरने और उनके अनुकूल होने में मदद मिल सकती है।
- शहरों के बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना महत्वपूर्ण है। बेहतर वेंटिलेशन, कूलिंग मैकेनिज्म और जलभराव की रोकथाम के साथ आंगनवाड़ी केंद्रों (AWC) और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (PHC) के डिजाइन को बेहतर बनाना इन सेवाओं को जलवायु बदलाव के लिए अधिक लचीला बना सकता है।
- प्रभावित इलाकों में, पहुँच में सुधार और गर्मी के प्रभावों को कम करने के लिए मोहल्ला स्तर पर हरित गलियारे विकसित किए जा सकते हैं।
- जलभराव को रोकने के लिए बेहतर जल निकासी व्यवस्था के साथ सार्वजनिक पार्कों को फिर से तैयार करना और छायादार, ठंडे खेल के मैदान स्थापित करना भी बच्चों के लिए सुरक्षित मनोरंजन स्थान प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, यह सुनिश्चित करना कि स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसी आवश्यक सेवाओं में आपातकालीन बैकअप बिजली हो, सेवा में व्यवधान को रोक सकता है।
- विभिन्न नीतियों में जलवायु-अनुकूल शहरी नियोजन को लागू किया जाना चाहिए, विशेष रूप से तेज़ी से शहरीकरण करने वाले शहरों में। भवन संहिताओं (बिल्डिंग कोड्स) में जलवायु-स्मार्ट डिज़ाइन की आवश्यकता होनी चाहिए, जिसमें बाढ़-रोधी और गर्मी-अनुकूल बुनियादी ढाँचा शामिल हो, विशेष रूप से आंगनवाडी, स्कूल और स्वास्थ्य सेवा केंद्रों जैसी महत्वपूर्ण सेवाओं के लिए। शहरी ज़ोनिंग विनियमों को उच्च जोखिम वाले बाढ़ क्षेत्रों में निर्माण को न्यून करना चाहिए और शहरी गर्मी को कम करने के लिए हरित गलियारों के विकास को बढ़ावा देना चाहिए।
- हाल ही में ICLEI साउथ एशिया द्वारा स्थानीय शहरी निकायों के साथ मिलकर "केपेसिटिज़" कार्यक्रम के अंतर्गत भारत के ०८ शहरों का **"नेट जीरो क्लाइमेट रिजिलियेंट क्लाइमेट एक्शन प्लान"** तैयार किये गए

हैं, जो शहरों को बदलते जलवायु में शहरी नियोजन और विकास के लिए एक दृष्टि प्रदान करते हैं। इस प्रकार के एक्शन प्लान देश के विभिन्न शहरों के लिए बनाये जाने आवश्यक है, ताकि निकायों को इस दिशा में सोचने और काम करने की दिशा मिल सके।

- शहरों को व्यापक शहरी नियोजन और जलवायु लचीलापन रणनीतियों की आवश्यकता है। इसमें शहरों के संवेदनशील क्षेत्रों में जलवायु-लचीला बुनियादी ढाँचा बनाना, शहर की योजना में जलवायु जोखिम आकलन को एकीकृत करना और टिकाऊ निर्माण प्रथाओं को बढ़ावा देना शामिल है।
- स्वास्थ्य नीतियों में जलवायु परिवर्तन के प्रति छोटे बच्चों और गर्भवती महिलाओं की विशिष्ट कमज़ोरियों पर विचार किया जाना चाहिए। इसमें मातृ एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रमों में हीटवेव और बाढ़ प्रबंधन प्रोटोकॉल को एकीकृत करना शामिल है। शहरी निकायों को उचित वेंटिलेशन, शीतलन प्रणाली और जल स्वच्छता के साथ जलवायु-संवेदनशील स्वास्थ्य सुविधाओं को अनिवार्य करना चाहिए।
- प्रभावी नीति बनाने के लिए मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर व्यापक आंकड़ों (डाटा) की आवश्यकता है। स्थानीय सरकारों और संस्थाओं को जलवायु-प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता संबंधी चुनौतियों पर वास्तविक समय के आंकड़ों को एकत्र करने, उनका विश्लेषण करने और उनका प्रसार करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। यह डाटा कमज़ोर आबादी के लिए स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सामुदायिक बुनियादी ढाँचे के लचीलेपन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से बनाई गई नीतियों को सूचित करेगा।

(आलेख: ओम प्रकाश; प्रारम्भिक बाल विकास विशेषज्ञ, ICLEI साउथ एशिया)